नीति प्रदीप

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमदेशाधिकारीनव्वाब

लफ्टंट गवर्नर बहादुर की आज्ञानुसार

श्रीयुत साहिब डैरेक्टर आफ़ पबलिक

इन्स्ट्रकशन बहादुर मुमालिक

मग़रबी व शुमाली की

आज्ञासे

पश्चिमदेशीय स्त्रियों की पाठशालाओं की

विद्यार्थिनियों के लिये

बरेली तत्वबोधिनी सभा में तहज़ीबुल अख़लाक़ से

हिन्दी भाषा में उल्था हो कर संग्रह हुआ और

बरेली

रुहेलखंड लिटरेरी सुसाइटी के छापेखाने में

छापा गया
सन् १८८३ ईसवी

चौथी बार १०००
मोल फ़ी जिल्द

नीति प्रदीप

भूमिका

यह बात जो मनुष्य वर्णन करते हैं कि किसी समय
सुख और दुःख ऐसे कारणों से उत्पन्न होते हैं कि
जो मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर हैं सत्य है परन्तु
हम कहते हैं कि सम्पूर्ण मनुष्यों का आराम उन्ही
के उद्योग और शील स्वभाव पर नियत है
प्रयोजन इस पुस्तक के संग्रह करने का यह है कि
युवा अवस्था वालों को भले प्रकार
ज्ञान हो जावे कि आराम बहुधा उन्हीं
के श्रेष्ठ चाल चलन का फल है
और ऐसा उपदेश दिया जाय कि वे अपनी उत्तम
दशा की उन्नति इस प्रकार करें कि संतोष और
सुख जो प्रत्येक मनुष्य को [illegible] और न्यूनाधिक

प्राप्त भी हो सकता है हाथ से न जाता रहे इसबात पर सब मनुष्यों की सम्मति हो चुकी है कि सुशीलता ही आनन्द का निस्संदेह आदि मूल है परन्तु शोक की बात यह है कि उनको यह वचन याद नहीं रहा फिर अब विचारना चाहिये कि यह सुशीलता किस प्रकार प्राप्त होती है ॥ प्रघट हो कि यह केवल आचार और व्यवहार के शुद्ध करने से प्राप्त होती है शिक्षा का यह बड़ा लाभ जाना गया कि वह शिष्य के स्वभाव को परिपक्व अवस्था को पहुंचा देती है अर्थात नवीन विद्यार्थियों को सिखाती है कि अपने समस्त कार्य्य व्यवहार में सच्चे और धार्मिक और पवित्र हृदय हो जावें और इस प्रकार से साधु भाव को ग्रहण करें कि परमेश्वर के निकट भी विश्वास योग्य बन जावें जैसा कि कोई सदैव सत्य वादी है तो सम्पूर्ण मनुष्य उस की बात को अंगीकार कर लेते हैं और उस में कुछ सन्देह नहीं करते ॥ इसी प्रकार जो

कोई मनुष्यों के साथ अवसर पर दया करता है उपाधि और कपट नहीं करता तो उस के परोसी उसको सुशील और साधु हृति और शुभ चिन्तारी जाना करते हैं

पहिला पाठ

स्वयं पालन

हे बालको जितनी तुम को परीक्षा हो चुकी है उस से यह बात सहज में निश्चय से ज्ञात हो जायगी कि कोई वस्तु तुम्हारे आवश्यकता अथवा सुख और आराम की बिना परिश्रम किये प्राप्त नहीं हो सकती यद्यपि तुम्हारी अभी युवा अवस्था है परन्तु यह बात तो तुम्हारी दृष्टि में समा गई होगी कि तुम्हारे माता पिता भी बिना परिश्रम के द्रव्य उपार्जन करते कि जि[illegible] से आवश्यक वस्तु मोल लेते हैं देखो वा

लकपन से तुम्हारे पिता ने तुम को भोजन वस्त्र से पा-लन किया और यथा शक्ति विद्या अध्ययन कराई और अपने हृदय का अत्यंत स्नेह तुम्हारे प्रति अर्पण किया इस लिये कि तुम अपने लौकिक व्यवहार में प्रतिष्ठा प्राप्त करो और तुम इस बात पर ध्यान करके कि तुम्हारे पिता की ओर से इस कार्य्य में परिश्रम और द्रव्य बहुत खर्च हो चुका है उस से जियादे आसा रखना अनुचित है सि-वाय इसके कि वह तुम्हारे हक में श्रेष्ठ संमति और सत उपदेश करे। जब तुम ईश्वर की कृपा से ऐसे योग्य हुये तुम्हारे माता पिता तुम्हारी पालना न करें तो तुम को उचित है कि अपने उद्योग से अपना पालन पोष-ण करलो यह बात तुम को असह्य नहीं मानना चाहिये तुम्हें यह कर्त्तव्य है कि अपने निर्वाह के लिये चिंता कर लो क्या आश्चर्य्य है कि जिस प्र-कार संपूर्ण स्थावर जंगम सृष्टि का हाल है वैसा ही तुम्हारा भी हाल होता और संसार की उत्पत्ति के

अनुसार साधारण यह रीति है कि संपूर्ण जीवों के
बच्चों को जब चलने फिरने की शक्ति हो जाती है
फिर उन को अपने माता पिता के संग की आव-
श्यकता नहीं रहती है ॥ इसी रीति से संपूर्ण लोगों
को गोष्ठी से यही मार्ग और यही प्रचार मनुष्यों
में भी वर्त्तना योग्य है कि वे भी अपने लड़कों को
समय की ऊंच नीच जानने के वास्ते और जगदर्शी
होने के लिये घर से भेज दिया करें और इसी प्रकार
बालकों को भी उचित है कि अपने ही स्वाभाविक
उद्योग से अपने उदर पूरण करने की चिंता करें
इस के विपरीत जो २ वृत्तांत हमारे नेत्रों से देखने
में आते हैं उन से ज्ञात होता है कि मनुष्य को
सत्स्वभाव के सिखाने वाली शिक्षा की ओर जो
परमेश्वर के यहां से हमारे मार्ग जताने को प्रका-
श हुई है बहुत कम ध्यान है हे बालको तुम्हें
इस अवस्था में उचित है कि अपनी सारी हिम्मत को

इसी प्रबंध के विचार में लगाते रहो कि हम बिन दूसरे की सहायता अपना पालन पोषण करें। जब तुम को परमेश्वर ने सत असत जानने की बुद्धि दी और परिश्रम करने के लिये हाथ पांव शरीर अनुग्रह करदे दिये फिर किसलिये अपने पालन पोषण में अन्य पुरुषों की सहायता चाहते हो हे बालको तुम यह न जानो कि हमारी इच्छा यह है कि तुम को सहायक और मित्र बिना अकेला छोड़ दें क्योंकि तुम्हारे अकेले छोड़ने से हम को यह सन्देह है कि तुम्हारे सत्य भाव में हानि पड़ेगी और क्लिष्ट कल्पना करनी होगी मुख्य प्रयोजन यह है कि तुम अपना ध्यान किसी कार्य अथवा उद्यम में लगाओ और जिस काम वा उद्यम को सीखना चाहो उस की ओर चतुराई दृढ़ता और धीरज से मन को लगाओ यह सत्य है कि तुम पहले ही पहल वा कुछ दिनों इस योग्य नहीं होगे कि अपनी पालना अपने आप कर सको परंतु अच्छी तरह समझ लो कि तुम्हारे लिये

यह मार्ग सुंदर फल पाने का है ॥ हर एक मनुष्य को आनंद होता जो उस को यह बात ज्ञात होती कि जिस संपति को वह प्राप्त करता है वह उसी के हाथ के श्रम से उत्पन्न होती है ॥ यह कहावत परंपरा से चली आती है कि अपनी मिहनत का एक रुपया मित्रों के बीस रुपये के बराबर होता है और जो द्रव्य बिना श्रम किये प्राप्त होता है उस को मनुष्य तुच्छ समझते हैं परन्तु जो द्रव्य महा परिश्रम से मिलता है उस की प्रतिष्ठा अत्यंत होती है

दूसरा पाठ

उद्यम अंगीकार करना

यह बात कुछ कठिन नहीं प्रकाशित होती कि नवीन अवस्था वालों को पाठशाला छोड़ पीछे कौन कौनसी बात और कौन कौन सा उद्यम सिखाना चाहिये क्योंकि काम और उद्यम सीखने के प्रथम यह बात

उन को प्राप्त करनी उचित है कि जिस से कार्य्य व्यवहार में स्वाभाविक परिश्रमी हो जावें और प्रयोजन की भिन्नताई से दूर रहें किसलिये कि यदि परीक्षा की रीति से वे इन कामों के स्वाभाविक हो गये तो अन्य लाभ जो उस के आधीन हैं वे सब आप से आप प्राप्त हो जायंगे अच्छी तरह विचार करलो कि संपत्ति और यश [illegible] श्रम और सचौटी ही के कारण से प्राप्त होता है और हजारों प्रकार के उद्यमों में इन दोनों का अभ्यास होना संभव है प्रथम वाक्य के अनुसार यह निश्चय है कि कोई २ लड़के मुख्य २ कामों में बुद्धिमानी रखते हैं जैसा कि एक की बुद्धि (जेर सकील) अर्थात् यंत्र विद्या में प्रवीण दूसरे को सौदागरी की अभिलाषा और तीसरे को विद्या प्राप्ति करने की इच्छा होती है यह स्वाभाविकी इच्छा मुख्य २ कामों की ओर इसी प्रकार की ओर २ रुचि भी [illegible] की ओर [illegible] आती

पिता को उद्यम अंगीकार करने के लिये अव-
श्य प्रवृत्ति करेगी

प्रयोजन बनाने इस पुस्तक से सिवाय इस के
और कुछ नहीं है कि तुम्हारे विचार के लिये कुछ
२ संकेत लिखदिये जायं। तुम को कर्त्तव्य है कि
प्रथम तुम अपने को ऐसे उद्यम में लगाओ कि
जिस का अभ्यास और लाभ अधिक और निश्च-
ल होय और उन उद्यमों से बचते रहो कि जिन के
कारण तुमको एक जगह और एक देश में रहना होय
उस उद्यम को सुंदर जानना चाहिये कि जिस देश
और जिस पृथ्वी में किसी संयोग से पहुंचो वह तुम्हारे
पालन का कारण हो। जो ऐसा उद्यम अंगीकार करोगे
कि जिस की सम्पूर्ण मनुष्यों को आवश्यकता है तो क-
भी तुम धोखा न खाओगे क्योंकि जितने लाभ के उद्यम
हैं उनकी दिन २ प्रति वृद्धि होती है और जो उसके
विपरीत हैं उन की कमी होती जाती है।

तीसरा पाठ
तत्परता

हम विचारते हैं कि परिणाम को तुम चौदह १४ या पंद्रह १५ वर्ष की अवस्था में किसी उद्यम में लग गये और युवा अवस्था के मद में मग्न हो ॥

यद्यपि तुम आज कल नोकर हो परन्तु नौकरी करने से यह फल प्राप्त होय तो अच्छा है कि कालान्तर में तुम को योग्यता मालिक हो जाने की हो जाय

सेवा करने के दिनों में कभी २ तुम को ऐसे ऐसे काम करने पड़ें कि जो असह्य वा तुम्हारे समीप तुच्छ या चित्त की प्रसन्नता के योग्य न हों परंतु तो भी तुम को उचित है कि उन के करने में अपना परिश्रम और प्रसन्नता प्रघट करो

इसी प्रकार जिस काम की आज्ञा तुम को हो उस के करने में तुम्हारी प्रसन्नता प्रघट हो

किसलिये कि स्वामी को सचौटी और चौकसी के

सिवाय जितनी काम में तत्परता मनोहर है ऐसी और कोई वस्तु वांछित नहीं और यह भी जानते रहो कि जो तुम्हारे कार्य्य में ढील पाई जायगी तो मनुष्य तुम को मारा जानेंगे और जो तुम्हारे काम में सचौटी और वफ़ादारी और तत्परता प्रघट होगी जो तुम्हारी भलाई में कुछ भी संदेह नहीं बहुधा मनुष्यों से उलाहने सुने जाते हैं कि मनुष्यों को नौकरी नहीं मिलती सो निश्चय था कि इस विवाद में उन का कहना सच्चा होता परंतु इस में कुछ संशय नहीं है कि नौकरों और नायबों को जो अच्छे स्वामी मिलने सहज हैं परन्तु स्वामियों को सच्चे नौकर या नायब मिलने बहुत कठिन हैं

चौथा

पाठ

जान पहचान वा प्रीति करना

आवश्यक सब कामों में एक उत्तम काम नवीन अवस्था वालों का यह है कि वे मित्रताई करने में परिश्रम और खोज करें इसलिये कि इस दुनियां व दुधा जहां आदमी अपने अपने पालन का आश्रय रखते हैं वहां बहुत सों की मित्रताई पैदा करनी मन से अच्छी मालूम होती है परन्तु उन को यह सावधानी रखनी ज़रूर है कि बाज़े मित्र तो ऐसे विश्वास के लिये कहाते हैं कि हमारे साथ परिश्रम करने को अपनी आवश्यकता के समय प्राप्त होते हैं और बाज़े मित्र ऐसे होते हैं जो केवल दो तरफ़ के मन की खुशी के लिये आप से आप हमारे संग रहना चाहते हैं

दृष्टान्त

बहुत से मतलबी मित्र और थोड़े से सच्चे मित्र

प्रयोजन इस का यह है कि नवीन अवस्था वालों को आवश्यक है कि बहुत से जान पहचान करें और थोड़े मित्र करें॥ यह बात प्रघट है कि आदमी की वृद्ध अवस्था में कुछ२ मित्रों की सहायता और उपकार काम आते हैं और जब अपने मित्र के साथ होता है तो कार्य्य में और बोलने में बहुत रस और धीरज दिखाता है। परन्तु यह भाग्यवानी स्थिर स्वभाव वालों की है कि जो अच्छी तरह और शूरता से आप ही आप मित्रों के पीछे काम करते हैं यही मनोरथ प्रत्येक आदमी का होना चाहिये और नवीन अवस्था वालों को इस बात से भी ज्ञान होना ज़रूर है कि बहुत से काम अच्छे अच्छे जो ज्ञानी लोगों से अपनी जाति की भलाई के लिये प्रघट हुए हैं विना सहायता दूसरे के केवल उन्हीं के मुख्य स्वभाव से परिणाम को पहुंचे हैं जैसा कि ध्रुव सूचक यन्त्र जिस की सुई सदैव उत्तर

को रहती है और नया नया इल्म हयत अर्थात् फ़िज़िकस का भूगोल खगोल लोका रसम यानी हिसाब और प्रकार टीके लगाने सीतला के बनाने वाला हर एक इन का एक ही एक आदमी था यह दृष्टान्त छोटे दरजे का है यह मालूम है कि जो कोई आदमी संसार के तुच्छ अधिकार से अधिक ऐश्वर्य्य और प्रतिष्ठा की पदवी को प्राप्त होता है सो अपने ही परिश्रम और पुरुषार्थ से वह ऐश्वर्य्य पाता है और जो विचारे कि किस प्रकार इस बड़े अधिकार को पहुँचा तो प्रघट हो जावेगा कि उस ने स्वार्थी मित्रों से किनारा किया और सत्संग सच्चे मित्रों का किया और यह बात भी भले प्रकार से ज्ञात हो जायगी कि जो उन आदमियों से कि जिन से संयोग मिलने का होता था अपने कार्य्य में वह सलाह लिया करता तो इस तरह उसी बुरी अवस्था और मूर्खताई

में जो पहिले उस की थी ज़रूर पड़ा रहता
यह निश्चय है कि जब आदमी एकान्त में
बैठता है तब हरेक काम के सोच विचार में ख़ूब
लव लीन होता है
इसी प्रकार जब किसी काम में कोई मनुष्य अपने
विचार की पूरी सामर्थ्य ख़र्च करता है तब वह
काम अच्छी तरह सिद्ध होता है
यह निर्भयता उन नवीन अवस्था वालों की है
कि जो पहले इस बात से कि अच्छी तरह अपनी
ज़िंदगी के आराम के कामों में चित्त लगावें
मन के आनंद और चित्त की मग्नता के लिये
मित्रों की संगति में बंध जाते हैं
जिन की संगति से चित्त अवश्य ही बहला करता है
सिवाय इस के नवीन अवस्था वालों के मन
की कुटिलाई से अकेला रहने की रोक नहीं
होती वरन मित्रों की संगत में रहना चाहते

हैं। इसी कारण वह समय जिन में उचित है कि संग्रह ऐसी बुद्धि वानी का करें जो पीछे काम आवे व्यर्थ न खोना चाहिये और यह बुद्धिवानी केवल नवीन अवस्था ही के अवकाश के समय में प्राप्त होती है परंतु बड़े क्लेश की बात है कि यह बाल्यावस्था बहुधा मित्रताई के अत्यन्त बुरे कामों में व्यर्थ जाया करती है क्योंकि वे मित्र न तो विद्या के संग्रह में हमारे साथी होते हैं और न किसी अच्छे काम में हमारे सहायक होते हैं पर बहुधा केवल आनन्द और चित्त की मग्नता के लिये हमारे संग हुआ करते हैं बहुधा मनुष्यों में इस सत्स्वभाव शीघ्र प्राप्त होने वाले का बहुत व्यवहार है जिस के अर्थ यह हैं कि जो और आदमी करें सो यह भी करें ॥ मानो कि इस से श्रेष्ठ सत्स्वभाव न परमेश्वर ने आकाश से पृथ्वी पर उतारा है और न किसी वैद्य लुक़मान और अफ़लातून ने

बनाया है यह इस सत्स्वभाव बाल्यावस्थावालों
में उस समय संपूर्ण दृढ़ता के साथ प्राप्त होते हैं
जब वे अपने समान अवस्थावालों की प्रीति रखते हैं
हे बालको ज्यों ज्यों यह बुरे स्वभाव पीछे उतार और
घटाव तुम्हारे के होते हैं उसी प्रकार तुम को जल्द
उपदेश खोटे मार्गों का करते हैं यह बात तुम को निः
संदेह प्राप्त हो जायगी कि जो कोई अपने समय को
आनंद के साथ बिताया चाहता है तो उसे कर्त्तव्य है
कि इन कामों से बचा रहे और इसी प्रकार जिस
आदमी का यह मनोरथ हो कि बड़े अधिकार को
प्राप्त हूं और अपनी समान अवस्थावालों से अधिक
प्रतिष्ठा पाऊं और सब मनुष्यों में सुयश को प्राप्त
करूं तो उसी तरह स्वार्थियों से अलग रहना
कर्त्तव्य होगा ॥

प्रयोजन यह भी है और हे बाल्यावस्थावालो
तुम को अवश्य कर्त्तव्य है कि अपने तई

आलस्य और व्यर्थ मग्नता से बचाते रहो और नीति में भी लिखा है कि हे मित्रो मन के वेग को रोक कर अपने परिश्रम से अपना पालन करो

पाँचवाँ पाठ

सच्चोटी

सच्चोटी एक उत्तम मूल तुम्हारी शिक्षा का है इसी कारण तुम को उचित है कि पूर्ण स्वाद से सच्चोटी में दृढ़ हो जाओ और तुम को यह भी करना अवश्य है कि अपने स्वामी के समय और माल को निष्फल मत करो और उन कामों से कि जिन में छल और दोष हो अपने तईं बचाते रहो तुम इस से निःसंदेह जान लो कि चोरी के सिवाय छल और दगा बाज़ी और बहुत से कामों में भी हो सकती है ॥

जैसे कोई किसी का माल चाहे बल चोरी सवा

डाँके से न ले परन्तु धोखा देकर झूठ बोल कर वा दग़ाबाज़ी करके ले ले तो इस को भी बेईमानी कहेंगे इसी कारण झूठ में या धोखा देने में और चोरी करने में कुछ भेद नहीं है और सबों का दोष बराबर है परन्तु यह अफ़सोस है कि तुम को बहुत ऐसे आदमियों से संगति पड़ेगी कि जो झूठ बोलने वा कपट करने को बुरा नहीं जानते हैं

जैसे कि नित्य ऐसे मनुष्यों का हाल कि जो प्रघट में भले आदमी जान पड़ते हैं सुन्दर सुन्दर स्थानों में रहते और अच्छी अच्छी दुकानें रखते हैं यह सुनने में आता है कि वे अपने मित्रों और नौकरों और ग्राहकों से लाभ प्राप्त करने के लिये हज़ारों बहाने कर जान बूझ झूठ बोला करते हैं

विचारो किस प्रकार बढ़ कर यह दोष की बात

है माना कि ऐसे अपराधी यद्यपि साहिब
मजिस्ट्रेट के यहां सजा पाने से बच जाते हैं
परंतु उन के बड़े अपराधी होने में कुछ संदेह नहीं
परंतु आप ही उन का दिल किसी समय में अवश्य
उन के इस अधर्म्मीपन पर पश्चात्ताप धिक्कार का
लगावेगा देखो प्रतिष्ठा और सचाई के बदले में
जिन्हें सुंदर रीति जीवन का कहते हैं यद्यपि कोई
मुख्य बदला नहीं मिलता परन्तु चित्त का अद्भुत
आनंद उन के स्वभाव से प्राप्त होता है और इसी
प्रकार अपराध का मार्ग संपूर्ण क्लेश से भरा है
इसी हेतु से जीवन उस जितेंद्रिय का जो कि मन
के बेगों को अपने बड़े पुरुषार्थ से रोकता है
यद्यपि कैसे ही क्लेश में हो परन्तु बड़े आनंद
से व्यतीत होता है ॥
जो आदमी अपनी प्रकृति के अनुकूल
और मार्ग सत्स्वभाव और परमेश्वर की

आज्ञाओं के अनुसार अपने काम किया करता है
उसे संपन्नता का सुख मिलता है और उस का
कंधा भार से रहित होता है क्योंकि जानता है कि
मैं अपने अवश्य कर्त्तव्य समाप्त कर चुका और
न कोई मुझ को बुरे काम का दोष लगाय सकता है
और न कोई मेरा वैरी है और जानता है कि
मेरा चित्त दुःख देने वाले सोच विचारों से
रहित है कि जिन से संदेह क्लेश का रहता है
और जो कारण आनंद प्राप्त करने वाले पुरुषार्थ
के मार्ग को रोकने के हों तो
सच है कि आनंद के ज़ियादे करने वाले
इन मनोरथों से एक प्रसन्नता प्राप्त होती है
जो द्रव्य के सुख से बढ़कर है
सब प्रकार जिन बाल्यावस्था वालों को
यह अभिलाष हो कि
विश्वास योग्यता और खूबी और प्र-

सन्नता से अपनी अवस्था को व्यतीत करें उन्हें कर्त्तव्य है कि अपने सम्पूर्ण व्यवहारों में एक सचौटी अंगीकार करें ॥ सुनो तुम कि दियानत-दारी का यही प्रयोजन नहीं है कि उन कामों से दूर रहो कि जिन के प्रघट होने से मनुष्य को क़ैद हो जाती है बरन हमारी बुद्धि में उत्तम प्रयोजन सचौटी का यह है कि मनुष्य छोटे से छोटे और गुप्त से गुप्त धोखा देने से और ऐसे काम से कि जिस में निषिद्ध लाभ होय बचता रहे प्रयोजन यह है कि दियानतदारी आदि मूल सुंदर गुणों की है ॥ जिस नवीन अवस्था वाले की तरफ़ एक हिसाब में भूल से एक रुपया वा एक आना चला जावे तो भूल के मालूम होने के साथ ही उसे फेर दे या जिस नवीन अवस्था वाले को कि जब उस के मित्र उसे सम-झावें कि तू ऊपर के थोड़े से नफ़े को ले लिया

कर जिस के लेने की उसे आज्ञा नहीं है और
वह अपने विश्वास से सब तरह निषेध करके
कहे कि मैं थोड़ा सा भी धन अपने स्वामी या
माता पिता की बिना आज्ञा नहीं छुऊंगा ऐसे
नवीन अवस्था वालों को विश्वास और आनं-
द का प्राप्त होना कुछ कठिन नहीं है॥
और विपरीत इस के जो मनुष्य बुरे आचरण
वाला हो कि जो उस के आगे कोई वस्तु झूठी
और अयोग्य आवे उठा लेवे और अन्य मनुष्यों
की सूक्ष्म सूक्ष्म वस्तुओं को इस विचार से कि
कोई मुझे न पकड़ेगा ले लेवे वह आदमी अपनी
मृत्यु और नाश करने के पीछे पड़ा है॥ नीचे
लिखे हुये दृष्टान्त से ज्ञात होता है कि पक्की सचो-
टी से सब मनुष्य उस की प्रशंसा करते हैं और
लाभ उस के संग रहता है॥ और बड़े बड़े
गुणी और धनी भी उस से बहुत प्यार

करते हैं ॥

पहला दृष्टान्त
सच्चौटी

संक्षेप वर्णन
एक
गरीब
और सच्चे लड़के का

एक गरीब आदमी जिस का बड़ा कुटुंब था
तंगी और क्लेश से निर्वाह किया करता किसी
संयोग से उस का एक लड़का एक धनाढ्य ज़मी
दार के यहां पश्चिम के देशों में नौकर हो गया
एक दिन उक्त ज़िमींदार ने उस लड़के को अच्छे
चलन के बदले अपनी मिरजई को जो बहुत
दिनों से उतार रक्खी थी इनआम की रीति
से दी और उस लड़के ने भी मिरजई ले

कर सन्दूक में बुद्धिवानी से रख दी दो वर्ष के बाद जब वह लड़का बड़ा हुआ उस मिरज़ई को निकाला तो क्या देखा कि दश असर्फ़ियाँ उस के अस्तर की तह से सी हुई रक्खी हैं जिन को उस ज़िमींदार ने किसी प्रयोजन के लिये छुपा कर सिलवा रक्खा था तब झटपट वह ग़रीब साथ अपने लड़के के अशर्फ़ियाँ ले कर उस ज़िमीं-दार के घर पहुंचा और सारा समाचार उन के मिलने का कहा। ज़िमींदार उन के सच्चेपन से प्रसन्न हुआ जो कि वह आप भी सच्चा था इसलिये उसने अपने दो बेटों से सम्मति करके यह विचार किया कि इस लड़के को और इसके बाप को इनआम देना चाहिये। और इसी हेतु से उन को बुलाकर कहा कि मैं तुम्हारी इस धर्मज्ञता से जो तुम से प्रघट हुई प्रसन्न हुआ। और शेख़सादी अपनी किताब गुलिस्तां के ७ वें बाब की

उन्नीसवीं हिकायत में लिखते हैं कि धनाढ्य ग़रीबों के ख़जानची हैं यदि उस में यह ज़ियादा होता कि धनाढ्य ग़रीबों और सच्चों के ख़ज़ानची हैं तो क्या अच्छा होता ॥ इसी वाक्य के अनुसार मैं तुम को एक हज़ार रुपया इनआम देता हूं ॥ और हे लड़के तुम को मैं ने अपने सब इलाके का अधिकार सौंपा इस कारण से कि मुझ को तुझ पर इस हेतु से कि तू ने अपनी स्वाभाविक सच्चाई का मुझे अच्छा गुण दिखाया सम्पूर्ण भरोसा प्राप्त हो गया

दूसरा दृष्टान्त

सच्चाई

एक दिन एक बालक को जिस की अवस्था अनुमान से बारह वर्ष की होगी उस के पिता

ने सर्राफ़ की दूकान पर एक रुपया भुनाने को
भेजा जिस समय उसने रुपया भुनाया था
अँधेरा हो गया था और सर्राफ़ ने रुपया ले कर
बिना देखे भाले पैसे दे दिये जब बालक घर पहुँचा
तो क्या देखता है कि सर्राफ़ ने भूल कर एक अठन्नी
दुअन्नी पैसे की जगह पैसों में दे दी ॥ प्रातः काल
ही दूसरे दिन बालक सर्राफ़ की दूकान पर गया
और कहने लगा कि आप ने मुझे कल संध्या के
समय मेरे रुपये के यथार्थ पैसे नहीं दिये सर्राफ़
बिना सुने इस बात के कि लड़का क्या कहता है
सच बोल कर कहने लगा क्यों मिथ्या बोलता है
तू उक्त रात्रि को माल चुरा ले गया है और अब
कहने आया है कि पूरे पैसे नहीं दिये ॥
किसी संयोग से कोई भला आदमी
उस मार्ग में चला जाता था
यह बात सुन कर कहने लगा तुम लड़के को

बिना उस की बात सुने झूठ बोलने का दोष लगा
ते हो तब वह भला आदमी लड़के से पूछने लगा
कि रुपया भुनाने के विषय में हे बालक तू क्या
कहता है
तब बालक बोला कि हे महाराज सर्राफ़ ने भूल
से मुझे पैसों में ज़ियादह दाम दे दिये हैं और मैं
उन को फेरने को आया हूं तब वह भला आदमी
सर्राफ़ से कहने लगा कि तुम ने बड़ी भूल की
और अपनी क्रूरता को प्रघट किया
यह लड़का बड़ा सच्चा और धर्म्मात्म है
दोष के देने की जगह इनआम के योग्य है
सर्राफ़ बोला कि मुझे इस अपनी शीघ्रता पर
बड़ा पश्चात्ताप है
और अब मैं उस का इस प्रकार बदला करूं-
गा कि लड़के से कहता हूं कि मेरी दूकान
से जितनी चीज़ चाहे इनआम की रीति

से ले जाय तब वह भला आदमी बोला कि मैं इस लड़के को जब कुछ और बड़ा हो जाय-गा अवश्य अपने परगने में एक नौकरी दूंगा क्यों कि मेरी तरफ़ बहुत से मुहर्रिर और मुन्शी चतुर और बुद्धिवान् हैं परंतु सच्चे और धर्मज्ञ बहुत थोड़े हैं

मेरी बुद्धि में सचौटी सहस्त्र दर्जे संसार में चतुराई से श्रेष्ट है और यह वचन कवि का सत्य है कि सच्चे आदमी सब जगत के मनुष्यों से उत्तम हैं

छठा पाठ

द्रव्य का ख़र्च करना

परिमित व्यय का मार्ग और मन के मारने के प्रति विचार करो जो रुपया बच सके अवश्य है कि उस को एक महाजन के पास वा

किसी उपाय से धरोहर रखते जाओ जब तक
वह इतना बढ़ जाय कि जो लाभ कारक एक काम
के ख़र्च के लिये बहुत हो जाय ॥
परन्तु विचारना इस बात का अनुमान से दूर है कि
कितने रुपये आना पाई करके युवा अवस्था वाले
व्यर्थ ख़र्च में नाश कर देते हैं परन्तु निश्चय है
कि उन के हाथ से इस छोटे मनोरथों को बढ़ते बढ़ते
ख़र्चों से बहुत बढ़कर उड़ जाया है और बहुधा
इस प्रकार से उड़ा है कि जिस से कुछ लाभ प्राप्त
न हो ॥ संपूर्ण निर्धन आदमियों को यह बात अव-
श्य स्मरण करने के योग्य है कि जो अपनी सब
कमाई को ख़र्च कर दें और बचाते न जावें तो
कठिन है कि उन की वर्तमान दशा से कभी भ-
ली दशा हो जाय यद्यपि उन के लाभ के संयोग
आगे दृष्टि के प्रघट होय परंतु दरिद्रता की दशा
में उन को उन संयोगों से कुछ लाभ न होगा वरन से

भव है कि ऐसा संयोग हो कि जब किसी अधि
कार की अभिलाषा करना चाहते हों और ज़ियादे
ख़र्च करने के कारण द्रव्य उन के पास न हो
जिस से ख़र्च मार्ग का किया जाय वा कोई
आवश्यकता के [illegible] वस्तु बन बाये जायँ

सातवाँ पाठ

समय का

बचाव और अपने स्वभाव की

वृद्धि के वर्णन में

जिस प्रकार रुपये ख़रच करने में परिमित व्यय
का मार्ग प्रशंसा के योग्य है इसी प्रकार समय
के ख़रच करने में होशियार रहो क्योंकि समय ही मुख्य
माल और अमोल धन है ॥ और यह बात

ध्यान करने के योग्य है कि बहुधा युवा अव-
स्था वाले अपने अवकाश और बेकारी के समय
को केवल वृथा ही नहीं खोते वरन नाश करदे-
ते हैं क्योंकि बहुधा वे लोग व्यर्थ बकवाद आल-
स्य और काहली में दिन व्यतीत करते हैं सिवाय
इस के बाज़ार में वृथा फिरना वा बैठे हुये मक्खी
मारना क्या भला है यदि इस प्रकार की
अवस्था व्यतीत करने के बदले युवा अवस्था
वाले अपने अपने अवकाश के समय को
परिश्रम वा विद्या प्राप्त करने में ख़रच करते
तो क्या ही अच्छा होता और जो मनुष्य इस उपदेश
से और अपनी भाग्यवानी से इन कामों में
तत्पर होते उन्हें क्या क्या अच्छे लाभ मिलते
प्रयोजन यह है कि अवकाश के समय निकम्मा
बैठना बड़ी मूर्खता है ॥

इतिहास कारकों का इस बात पर संमत है कि जो जो

राजा इस जगत में प्रतिष्ठित हुये वे सम्पूर्ण
अपने अवकाश के समय को विद्या प्राप्त करने
में खर्च करते थे इसी कारण से सुलेमान बेटे
दाऊद के और अलफ्रेड बादशाह इंग्लिस्तान
और शारलमेन बादशाह फ्रान्स और जर्मनी
और हारूं रसीद खलीफा बग़दाद और अकबर
बादशाह हिन्दुस्तान में नामी हो गये
अपनी बृद्धि के लिये अपने आप विचारना चा-
हिये कि हर एक अहलकार को अवश्य कर्त्तव्य
है कि अत्यन्त मिहनत और परिश्रम से अपने
संबंधी काम को पूर्ण करे
इस बात से तुम निस्संदेह बोध रखते हो कि जो
मनुष्य सामर्थ्य भर अपने संबंधी काम में मिहनत
और परिश्रम करता है वह अवश्य बड़ी प्रतिष्ठा
और विख्याति प्राप्त करता है जो कछु तुम को
सीखना हो उस को अच्छे प्रकार सीखो और कोई

कठिन बात आगे आ जाय तो उस से निरास न हो और न अपने परिश्रम के फलों से आश्चर्य्यवान् हो ॥ मौन हो के विना पाखण्ड प्रकट करे बड़े परिश्रम से काम में लगे रहो और सदैव अपने स्वभाव की वृद्धि के आशावान् रह कर परिश्रम उठाने की प्रकृति ग्रहण करो कि जिस से परिणाम में तुम्हारे सुजश का प्रारम्भ दृढ़ रहे ॥
अवश्य है कि जो तुम इस सुगम मार्ग पर दृढ़ता से परिश्रम किये जाओगे तो तुम सुखाभिलाषी और दुर्जन और दुर्व्यसनी आदमियों से अवश्य अच्छे हो जाओगे

आठवां पाठ

पशुओं पर दया करना

जगत में कोई कोई मनुष्य जो पशुओं पर दया नहीं करते कुछ आश्चर्य्य नहीं कि वे अपनी समान जातियों पर भी निर्दयीपन करें या शनैः शनैः किसी दिन बहुत बुरे काम के करनेवाले हों॥ कठोरता और निर्दयीपन के समय इतना विचारना चाहिये कि जो कोई हमारा स्वामी इसी प्रकार हम पर भी अन्याय और उपद्रव करे तो कितना असह्य जान पड़ेगा सिवाय इस के जो कोई अपने सुख वा रुचि के लिये बैल वा घोड़ा आदि रक्खे तो उसे उचित है कि उनका अच्छी तरह पालन पोषण करे और अच्छे स्थानों में रक्खे॥ जिन्हों ने अखवानुस्सफ़ा पढ़ी है उन को यह बात मालूम होगी कि जो पशु पक्षी बोल सकते तो आदमियों

को

कैसे कैसे उलाहने देते॥

बड़े निर्दयीपन की बात है कि जब घोड़ा वा

गदहा बुढ़ापे या थक जाने या भूख के कारण से हलके हलके चले तो उसको कोड़े मारें ॥ हिन्दुस्तान में गदहों और बैलों पर बड़े २ अन्याय होते हैं और उन के देह चोटों और ताड़नाओं से घायल हो जाते हैं इसी कारण सन १८६० ईसवी में एक कानून पशुओं के दुःख देने के निषेध में प्रचलित हुआ है कि जिस से कोई पशुओं पर अन्याय नहीं कर सकता छोटे पशुओं पर दया और करुणा करना न्याय का आदि मूल है क्योंकि वे बिचारे थोड़े दिन जी कर जीवन से रहित होते हैं विचारो कि उन पशुओं पर दया न करना वा मार देना कैसा अन्याय है और जो हिन्दू लोग कोई २ पशुओं पर अपने मत के अनुकूल वा इस श्रद्धा के कारण से कि उन में किसी २ आदमियों का जीव पीछे मृत्यु के आजाता है पालन वा पूजन करते हैं तो यह काम उन

का दयालुता और अनुग्रह में नहीं गिना जा-
ना मुख्य प्रयोजन यह है कि जैसे अच्छे
राजा अपनी प्रजा के साथ दया करते हैं उसी
प्रकार मनुष्यों को भी पशुओं के साथ दया
और कृपा से वर्त्तना चाहिये

नवां पाठ
संबंधियों के साथ उप कार करने के वर्णन में

साधारण अपने संबंधियों के साथ और
अवश्य करके अपने माता पिता और भाई
बहिनों के साथ हम को प्रीति और दया करनी
उचित है ॥ किसलिये कि हमारे माता

पिता ने हम को भोजन वस्त्र से रक्षित किया और ऐसे समय में हमारी रक्षा की कि जब हम बालक थे और अत्यंत पराधीन थे यदि दया माता पिता की हमारी उस दशा में न होती तो अवश्य क्लेश पाकर मर जाते इस कारण यह बात सत्य और अवश्य कर्त्तव्य है कि हम उन के उपकार के कृतज्ञ हों और उन के साथ प्रीति करें और अपनी सामर्थ्य भर उन की सेवा में तत्पर रहें और केवल उन की आज्ञा पालन करें और उन के वचन की पालना में साथ इस प्रतिज्ञा के कि वह आज्ञा उचित हो अपनी भाग्यवानी समझें ॥

पुनः

बालकों को अपने भाई बहिनों के साथ

सदैव प्रीति करनी चाहिये क्योंकि उन्हों ने उन के साथ शिक्षा पाई है साथ ही भोजन किया साथ ही खेले और माता पिता की प्रीति करने से भागी रहे ॥ और जो बालक ऐसा करेंगे तो जाना जायगा कि ये सुन्दर स्वभाव वाले हैं और सब के चित्त में प्रीति के योग्य हैं और जो आपस में जुदे हो जायँगे और झगड़ा करेंगे तो उन के चाल चलन प्रत्येक मनुष्य के चित्त में नमनी[illegible] और बुरे जाने जायँगे और सत्स्वभाव वाले उन से दूर रहेंगे ॥

और जो भाई बहिन आपस में प्रीति और मित्रताई रखते हैं तो यह प्रीति उन की युवा अवस्था के समय कारण उन की अत्यन्त कुशलता की होगी इसी कारण उन को उचित है कि बाल अवस्था के समय आपस में प्रीति करें और एक दूसरे की खबर

लेते रहें

दशमां पाठ

परिश्रम

कृतज्ञता और उपकार उस जगदीश्वर का कि जिस ने तुच्छ मनुष्य के लिये पृथिवी को इस प्रकार की वस्तुओं के उत्पत्ति के योग्य किया कि जिस पर उस का निर्वाह और सब प्र कार का आनंद प्राप्त है

परंतु कोई २ वस्तु हमारी आवश्यकता की विना परिश्रम प्राप्त नहीं हो सकती

दृष्टान्त १

देखिये कि अन्न बोना और काटना और धातु का खोदना और उस से औज़ार बन हुई

का कातना और फिर उस से वस्त्र बनाना यह काम तो अवश्य और उचित हैं ॥ इसी प्रकार परिश्रम से एक एक मनुष्य का वरन हर जाति के समुदाय को द्रव्य और संपति प्राप्त होती है विचार की जगह है कि जो किसी मनुष्य की यह इच्छा हो कि मुझे खाना वा कपड़ा वा और कोई वस्तु लाभ कारक मन की रीति के योग्य मिले तो उसे उचित है कि उन वस्तुओं के प्राप्त करने में परिश्रम उठाने वाला हो ॥

सिवाय उन लोगों के जो निर्बल प्रकृति होने के कारण से परिश्रम के योग्य न हों वा आप अपनी कमाई वा बपौती से ऐसा धनाढ्य हो उन्हें और कमाने की इच्छा न हो ॥ जैसा कि सन् १८६० ई० का दर्शात है कि जब रहने वाले देहात के काल के हेतु से मरने लगे तब सरकार ने यह उपाय किया कि जो मनुष्य परिश्रम के योग्य हैं वे सड़क और नहर के काम में

और कुछ आटा मज़ूरी की रीति से उन को मिला करे और जो देह के निर्बल होने के कारण से परिश्रम के योग्य नहीं उन को मैत खुराक दी जावे

दृष्टान्त २

जो मनुष्य परिश्रम और विद्या प्राप्त करने से अपनी वृद्धि करना नहीं जानते और जंगल में घूमते और आखेट में तत्पर रहते हैं उन को जंगली आदमी कहते हैं जैसे कि आमेरिका और काफ़िरिस्तान के रहने वाले और आस्ट्रेलिया के आदि निवासियों की यही दशा है और उन का निर्वाह का मार्ग अत्यंत बिगड़ा हुआ और नीच है क्योंकि उनकी खुराक़ बे स्वाद और वस्त्र बुरे हैं काल के समय में उन को सिवाय भूखे मर जाने के कुछ उपाय नहीं जंगली आदमियों के देश में यह

खराबी है कि अटकल से एक मील वर्गमें एक आदमी की आबादी मिलेगी ॥ विपरीत इस के जो मनुष्य परिश्रमी होते हैं उन की दशा बहुत सुंदर है क्योंकि वे पोहे रखते खेती करते और अपने रहने के लिये सुन्दर स्थान बनाते हैं व्यवहार और लेन देन करते हैं मुख्य यह है कि यह लोग जंगली मनुष्यों की अपेक्षा आनन्द में रहते हैं ॥ प्रयोजन यह है कि मनुष्य जिस प्रकार परिश्रम करता है उसी प्रकार सुख भोगता है जैसा कि इंगलिस्तान जर्मनी स्विटजरलेंड फ्रांस और हालेंड वाले जो सब कामों से बढ़कर परिश्रम उठाने वाले हैं इसी कारण सब लोगों से भले प्रकार सदैव सुख में रहते हैं इनके देशों में प्रत्येक मील में १०० से लेकर ३०० तक आदमियों की आबादी है इस से ज्ञात होता है कि जिस देश के मनुष्य बड़े परिश्रमी होते हैं उस में

उन देशों की अपेक्षा जहां लोग परिश्रमी नहीं होते बहुत बसती होती हैं और वहां के रहने वाले बहुत सुख आनंद से भी रहते हैं जिस प्रकार संपूर्ण जातों की वृद्धि और भलाई की दशा परिश्रम के हेतु से वर्णित हुई उसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य की दशा भी अवश्य बर्णन करने के योग्य है ॥
क्योंकि जो मनुष्य परिश्रम और टहल नहीं करता वा किसी अपने जातिवाले की सहायता नहीं करता उस के क्लेश में दिवस व्यतीत होते हैं परन्तु परिश्रमी आदमी को कुछ न कुछ आजीविका और सुख मिलता है

साधारण यह है कि जिस प्रकार आदमी परिश्रम और सचोटी ग्रहण करेंगे उसी प्रकार अपने कार्य्य व्यवहार में भाग्यवान होंगे ॥ और जो आलसी और झूठे होंगे वैसे ही निर्भाग्य होंगे ॥ जब ईश्वर की इच्छा में यह प्रकाश हुआ कि संपूर्ण उत्तम वस्तु

मनुष्यों को परिश्रम से प्राप्त हों उसी समय यह भी नियत हो गया था कि परिश्रम भी मनुष्य के लिये अवश्य लाभ कारक सुख और आनंद का कारण हो ॥ क्योंकि विना पाने सुख के कोई आदमी निरोगी नहीं रह सकता ॥ इसलिये उचित है कि कोई काम मानसी वा देह का हम किया करें और यह प्रयोजन इसलिये नहीं है कि मन के आनन्द के लिये कोई समय अवशेष नहीं रहे वरन विपरीत इसके थोड़ा बहुत सुख भी करना अवश्य है क्योंकि किसी काम में बहुत तत्पर रहने से देह का बल जाता रहता है और रोग पैदा हो जाता है

दृष्टान्त तीसरा
कहानी

एक किसान और उसके पुत्रों की ॥

तावों के मोल लेने में खरच किया करता संपूर्ण कार्य्य व्यवहार में आलस्य से दूर रहता और अत्यंत परिमित व्यय और समय के बचाव से जीवन को व्यतीत करता जब सत्रह वर्ष का हुआ तब फिलेडेलफिया को जो उत्तर आमेरिका का दूसरा नगर है चलागया वहां कुछ समय तक केमर नामी छापे वालों के साथ काम करता रहा उस समय में अपने परिश्रम और आप से अपनी विज्ञता की वृद्धि करने से इबारत के लिखने पढ़ने में अच्छा ज्ञाता होगया संयोग से एक दिन उस के हाथ की लिखी हुई चिट्ठी वहां के सूबे के देखने में आई उसे देख कर वह बहुत प्रसन्न हुआ और फ्रेंकिलिन को खोज कर अपने घर बुलवाया ॥

थोड़े दिन पीछे फ्रेंकिलिन अपनी वृद्धि के लिये लंदन को चला गया और थोड़े दिनों तक वहां छापने वालों के साथ काम करता रहा कारखा

ने में और काम करने वाले तो अपने अवकाश के समय और छुट्टी में शराब पीपे के अपने शिर को विकल करते थे

वहाँ यह भले स्वभाव वाला संयमी सूक्ष्म आहारी निरोग रहता और अपनी तनखाह में से कुछ रुपया बचाया करता ॥

वीस २० वर्ष की अवस्था में अत्यंत वृद्धि प्राप्त करके फिर शहर फ़िलेडेलफ़िया को लौटा और थोड़े दिनों के पीछे वहाँ कैसर के साथ साझी हो गया

बेंजमिन ऐसा परिश्रमी था कि प्रति दिन के कार्य्य व्यवहार करलेने के

सिवाय एक दो पत्र छापे का आप अपने हाथ से तैयार कर लेता

और उस के पड़ोसी भी उसे परिश्रमी सच्चा और सत्कर्मी सत् स्वभाव देख कर

काम दिया करते यहाँ तक कि वह सहज में ध-

नाढ्य हो गया ॥ उन्हीं दिनों उस ने एक अख़-
बार जिस में अति उत्तम आशय सत्स्वभाव के
सिंगार और आतंक की शिक्षा करने वाले लिखे जाते
थे प्रस्तुत किया और यह प्रसिद्ध पत्र दूर दूर तक
प्रसिद्ध हो गया और इस से बहुत सा लाभ उस को
प्राप्त हुआ परंतु ऐसी धनाढ्यता होने पर भी वह
सामान्य वस्त्र पहरा करता और परिमित व्यय से
चला करता वरन वाज़े समय एक पहिये की गाड़ी
को कि जिसे हाथ से आदमी चला लेते हैं उन
काग़ज़ों से भरी हुई जिन को वह छापे खाने के
लिये मोल लेता था अपने आप खींचा करता
पीछे इस के उस ने काग़ज़ बेचने की दूकान
करली और एक कुतुब खाना खोला
और एक पत्रा जिस में अनेक तरह के और
प्रकार प्रकार के उपदेश का वर्णन था
(ग़रीबरिचार्ड) के नाम से रचा ॥ परन्तु इन

सब कामों के प्रबंध करने पर भी अपनी विद्या की वृद्धि में अत्यंत समय का व्यय करना

तीस ३० वर्ष की अवस्था में अपने शहर के लोगों में ऐसे बड़े पद का अधिकारी हुआ कि अपनी जाति की सभा का सेकुरिटरी नियत हुआ और दूसरे वर्ष डिपुटी पोस्ट मास्टर हो गया इस के उपरांत उस ने इस विचार से कि जो पहुंच समझ की और योग्यता सच्चिदानंद परमेश्वर ने अपनी कृपा से मुझे दी है उस से कुछ लाभ ईश्वर के रचे हुये सब जीवों को पहुंचाया जावे तो बहुत उचित है इसी कारण उस ने एक सभा वास्ते प्रकट करने हिकमत विद्या और २ विद्याओं के नियत की॥ और एक बड़ी पाठशाला वास्ते शिक्षा बालकों के प्रवृत्ति की और घरों के अग्नि दग्ध से बचने के लिये एक सभा नियत किया॥

मैदान जिनकी कचहरी सूबे फ़िलेडेलफ़िया में

नियत किये गये थे बहुधा उसी के कारण से प्रबाधित थे ॥

पीछे इस के हिकमत विद्या के निश्चय करने की तर्फ़ ध्यान करने वाला हुआ और सन् १७५२ ई० में पतंग के सहारे से बिजली मेघ की गर्ज से उतारी और इस से पहले उस ने यह दृढ़ किया कि बिजली और सैयाल कहरुबाई का मूल वास्तव में एक है
इस के पैदा करने से फ़िलेडेल्फ़िया के छापे खाने वालों का नाम सारे यूरोप में विख्यात हो गया ॥ जिस समय में कि वह बूढ़ा हो गया था उस समय आमेरिका के सूबों में और उस के सदैव के रहने वालों के देश (अर्थात् इंग्लिस्तान) में लड़ाई हो रही थी जिस का फल यह हुआ कि आमेरिका के सूबे खुद मुख़तार हो गये इस लड़ाई में फ्रैंकलिन एक बड़ा उहदेदार था

और थोड़े वर्ष तक अमेरिका के रहने वालों की
तरफ़ से एलची होकर बादशाह फ्रांस के दरबार
में उपस्थित रहा वहां उसे यह पद पवित्र पुस्तक
का स्मरण हुआ जिसे उसका पिता बार बार पढ़ता
और स्मरण करता था जो मनुष्य अपने प्रबंधित
कार्य्य व्यवहार में चतुर है वह बादशाहों की राज
सभा में अवश्य खड़ा होगा ॥ अगले समय पूर्व
के देशों में और जहां हाल तक यह दस्तूर चला
आता था कि राज सभा में खड़ा होना महान्
प्रतिष्ठा का चिन्ह जाना जाता था
और यूरोप में आज कल्ह भी राज सभा में
बैठना अधिक प्रतिष्ठा का चिन्ह जाना जाता है
तात्पर्य्य इस वर्णन से यह है कि यद्यपि
फ्रेंकिलिन एक ग़रीब आदमी का लड़का
था परंतु तो भी उसने बड़े द्रव्य और
प्रतिष्ठा के साथ जो बहुधा मनुष्यों

को नहीं प्राप्त होगी अपनी अवस्था व्यतीत की
जब एक आदमी संसार में भले २ शोभा के काम
कर जाय तो और लोगों को अपने चित्त से अवश्य
उचित है कि उन कारणों को विचारें जिनका नि-
श्चय फ्रेंकलिन के विषय से होता है और उस के
रचित ग्रंथों से भी इसी प्रकार मिलता है
वह अपनी किताबों में लिखता है कि धन मार्ग
ऐसा खुला है जैसे बाज़ार का मार्ग ॥
और वह केवल दो बातों पर नियत है एक तो परि
श्रम दूसरे परिमित व्यय अर्थात समय और
धन को निष्फल मत करो और दोनों को भले
प्रकार काम में लाओ ॥ बिना परिश्रम और
परिमित व्यय के कोई काम नहीं हो सकता
और कौन सा काम है कि जो इन के कारण
से नहीं हो सकता

पीछे परिश्रम और परिमित व्यय के कोई

वस्तु नवीन अवस्था वाले के लिये वृद्धि प्राप्ति करने को ऐसी लाभकारक नहीं है जैसा कि चौकसी और सचोटी संपूर्ण कामों में उस के काम आती हैं ।। वह लिखता है कि परिश्रम भाग्यवानी का आदि मूल है और महान् परमेश्वर ने सम्पूर्ण वस्तु परिश्रम को कृपा की है जब तुम को कोई काम दिया जाय तो उचित है कि उस काम को उसी दिन पूरा करलो क्योंकि क्या जाने कल को कौनसा विघ्न आगे आ जाय ।। और अगर यह समझो कि जब तुम एक के नौकर हो और वह तुम को निकम्मा बैठा हुआ देख ले तब तुम को कितनी लज्जा की बात है कि जब तुम आप अपने को निकम्मा बैठा देखो

ग्यारह वां

पाठ

अपना काम आप करने और स्वयंपालन करने के वर्णन में

अघर में ऐसा प्रतीत होता है कि संकेत सृष्टि कर्त्ता परमेश्वर का सृष्टि के समय यह था कि सब मनुष्य उन संबंधों से कि जो महान् परमेश्वर ने उस के स्वभाव में रक्खे हैं

इस जगत में अपना स्वयंपालन और वृद्धि करें

इसी कारण

हम को औरों का भोजन वस्त्र वा कोई

और वांछित वस्तु के लिये

आश्रय करना अयोग्य है

और हम को आज्ञा हुई है कि

परिश्रम करें जिस से यह सब वस्तु प्राप्त हो सक-ती हैं॥ निस्संदेह सब मनुष्यों की आजीविका

ऐश आनंद की सामग्री इसी प्रकार प्राप्त हुई है और कोई प्रबंध इन का इस से श्रेष्ठ नहीं हुआ है ॥ इसी कारण नवीन अवस्था वालों को यह काम अवश्य योग्य है कि वे बालकपन से अपने आप को इस काम का स्वाभाविक करें कि बहुत कम अपनी आवश्यकता के लिये दूसरे का भरोसा करें जैसा कि नवीन अवस्था वालों को उचित है कि यह बातें सीख लें अर्थात् अपने वस्त्र आप पहना करें और अपना भोजन भी अपने हाथ से करें और प्रतीक्षा करने वाले न हों कि उन के नौकर ये काम किया करें और भी उचित है कि पढ़ना लिखना हिसाब करना बहुत शीघ्र सीख लें और अपने चित्त को विद्या से पूर्ण कर लें क्यों कि मकान में निकल कर अपनी रोटी कमाने के योग्य हो जावें ॥

यदि जनकापुर मिले तो किसी मुख्य समय में चौकस

हो कर किसी गुण वा व्योपार वा उद्यम को सीख लें जो कि आगे काम आवें

जो मनुष्य बहुधा अपना काम आप किया करते हैं और अपने ही परिश्रम और सोच विचार से अपनी आजीविका पैदा करते हैं तो निःसंदेह दूसरे आदमी उन को अवश्य प्यारा जानेंगे और उन की प्रतिष्ठा करेंगे

उन लोगों के लिये सचमुच बड़ी लज्जा की बात है कि जिन को परमेश्वर ने हाथ परिश्रम के लिये मन सोच विचार के लिये कृपा करके दिया है और वह आलसी और अज्ञात पढ़े हुये उन लोगों का कि जो अपने कार्य्य व्यवहार में तत्पर हैं वास्ते प्राप्त करने अपने मनो वांछित वस्तुओं के मुंह तका करें जिन वस्तुओं को वह आप ही अपने परिश्रम से यदि उद्योग करते तो प्राप्त कर लेते प्रयोजन यह है कि हम को अपने काम में

दूसरों के आधीन नहीं रहना चाहिये किसलिये कि बहुत कम और आदमी से अपना काम उस प्रकार प्रबंधित होता है जैसा कि हम आप उस को प्रबंधित कर सकते हैं

वरन बहुत समय अन्य आदमी से दूसरे मनुष्य का काम अच्छी रीति से समाप्त होता है वैसे कि अपना ही काम उन से नहीं हो सकता है

इसलिये कभी हम को उचित नहीं है कि जिस काम को हम आप कर सकते हों उसे दूसरे से करा वें

इसी वास्ते बुद्धिवानों की कहावत है कि आप काज महा काज ॥

दृष्टान्त

पांचवां

कि सावधान रहना जो वृत्तांत मेरे पीछे हुआ करे उस की चौकसी रखना जब चकावक संध्या के समय अपने घर आई तब बच्चों ने कहा कि आज किसान तुम्हारे पीछे यहाँ आया था और अपने खेत काटने के लिये अपने पड़ोसियों से कहताथा ॥ चकावक बोली अच्छा अभी कुछ भय की जगह नहीं है ॥ दूसरे दिन चकावक अपने स्थान पर आई तो बच्चे बोले कि आज भी कल ही का सा वृत्तांत बीता वह बोली कि बहुत अच्छा अभी कुछ तुम को सोच की जगह नहीं है

तीसरे दिन फिर प्रातःकाल वे सोच खाने के उपाय में चली गई परन्तु जब संध्या के समय अपने घर आई तो बच्चे बोले कि कल किसान और उस का लड़का आप खेत काटने को आवेंगे तुरत सुनते ही इस बात के चकावक बोले कि हाँ अब डर की जगह है क्योंकि जब तक

किसान अपने पड़ोसियों और मित्रों की सहाय-
ता अपने काम में चाहता था तब तक उस की
ओर से मुझे ध्यान भी न था परन्तु जब वह
आप कह चुका है कि मैं अपने खेत को आप
काटूँगा तो अवश्य यह बात प्रकट होगी

बारहवाँ
पाठ
औसान

अपने आप को जान बूझ कर शंका की जगह
में रखना मूर्खताई है परंतु यदि किसी जोग से
कोई शंका आगे आजाय तो उचित है कि
वीरता करके दृढ़ता और ढारस से उसे

दूर करे ॥ क्योंकि हम कैसे ही सावधान हो परंतु यह संभव नहीं है कि किसी न किसी समय अपनी अवस्था में कोई शंका न आवे ॥

संभव है कि हमारे वस्त्रों में वा जिस स्थान में कि हम रहते हैं आग ही लग जावे वा हम जल ही में गिर पड़ें वा जिस गाड़ी में हम सवार हों उसका घोड़ा ही हाथी आदि से बिचक कर गाड़ी को ले भागे ऐसी बिपत्तियों में बहुत से हमारे लोगों ने चोटें खाई हैं वरन प्राण तक जाते रहे हैं ॥

परंतु हम ऐसे अवसरों पर अवसान और चौकसी से ऐसा उचित विचार करें कि जिस से अपने आप को रक्षित कर सकें तो हानि और नुकसान अवश्य हम को कम पहुंचेगा ॥

शंका की दशा में कोई २ मनुष्यों के डर के मारे ऐसे औसान जाते रहते हैं कि उन से अपने बचाव के लिये कुछ उपाय नहीं हो सकता और

इसी कारण से वह शंका इस प्रकार बढ़ जाती है कि
जिससे मन को अत्यन्त कष्ट पहुंचता है या मारजाते हैं
और ऐसे समय में वे आदमी कि जिनके ओसान
थिकर रहते हैं
संभव है कि उससे बच जावें ॥ शंका के सम्पूर्ण
स्थानों पर अभिमूल यह है कि ओसान ठीक रक्खें
वरन ऐसे समय में उचित है कि अपने में हिम्मत
दृढ़ता और चतुराई रक्खें कि उस हानि के दूर
करने के वास्ते पूरा उपाय कर सकें
इसी यत्न का नाम ओसान का दृढ़ता है और यही
यत्न सदैव प्रशंसा के योग्य है
इसीलिये जब किसी आदमी के वस्त्र में आग
लग जाय तो उसे और लोगों से सहायता लेने के
लिये इधर उधर भागना नहीं चाहिये क्योंकि
जब वह खड़ा होगा या भागेगा तो उसके वस्त्र
अति शीघ्र हो जायंगे और देह भी जल जायगी

वरन उत्तम इस से यह है कि जमीन पर लेट
जाय और खूब लोटता फिरे किसलिये कि इस
कारण से आग जलदी से न भड़केगी॥
यदि किसी प्रकार संभव हो तो दरी वा किसी भारी
ऊनी लिहाफ को अपने शरीर पर खूब लपेट
ले इस उपाय से उसी समय वह धा ज्वाला
शीतल हो जाती है
जब घर में आग लग जावे और धुआं सब में भर
जाय तो वहां खड़े २ चलना उचित नहीं क्योंकि
उसमें धुवें से घुट कर कष्ट पहुँचने की शंका है
वरन श्रेष्ठ तो यह है कि हाथों और घुटनों के
बल चले क्योंकि स्वच्छ वायु उस समय में
धरातल के अत्यन्त समीप होती है॥ और
इसी प्रकार यदि कोई आदमी जिसे तैरना
नहीं आता हो पानी में गिर पड़े तो उसे पा
वों से हाथ पांव मारना उचित नहीं है
किसलिये कि इस सूरत में शीघ्र ही डूब

जायगा वरन उसे कर्त्तव्य है कि निश्चल होकर अपना श्वास रोक रहे जिससे अवश्य उसका शरीर पानी में हलका होकर जल के ऊपर तैर आवेगा और यदि अपने शरीर को बहुत नहीं हिलावेगा तो तैरता रहेगा

और इसी प्रकार यदि कोई आदमी किसी हलकी गाड़ी में सवार हो और घोड़ा उसका खिंचकर गाड़ी लेभागे तो उचित नहीं है कि अपने आप को जलदी करके उसमें से गिरादे वरन ऐसे समय में कर्तव्य है कि अपनी सामर्थ्य भर औसान से इतनी देर उसमें बैठकर यह सोच ले कि अब कौनसा उपाय करना अवश्य है यदि घोड़ा इतने समय में भागते २ ठहर जाय तो आनंद है कोई हानि किसी प्रकार की नहीं पहुंचेगी

और यदि सावधानी की रीति से ज्ञात होजाय इस गाड़ी में से उतरना ही योग्य है तो पीछे से खत

चौकसी करके उतर पड़े॥ यह बात स्मरण
करने के योग्य है कि जब कोई गाड़ी में सवार
जाता है तो उसमें भी एक कशिश चलने की
बराबर चलने के भर जाती है जिसको वह
दूर नहीं कर सकता इसलिये उचित है कि
अलग होने के समय चलती हुई गाड़ी में से
उस मार्ग की ओर सन्मुख उतरे जिस मार्ग में
गाड़ी चली जाती है इस उपाय से पृथ्वी पर गिरने
से बचे जैसा कि इसका [illegible] दृष्टान्त में अकबर
और बीरबल की कहानी बयान करी जाती है॥
एक दिन अकबर बादशाह ने अपने मंत्री बीर
बल से पूछा कि युद्ध के समय में क्या काम आता
है उसने प्रार्थना की कि हे बादशाह औसान काम
में आता है बादशाह ने कहा कि शस्त्र और ब
ल का नाम क्यों नहीं लेता बीरबल ने कहा कि
महाराज यदि औसान नष्ट होजाय तो शस्त्र
और बल किस काम आवें॥ समाप्तम्